कृषि मूल्य से अर्थ

कृषि मूल्य से अर्थ कृषि पदार्थों के मूल्यों से लगाया जाता है। यह मूल्य सदा स्थिर नहीं रहते हैं, अर्थात् कृषि पदार्थों के मूल्य घटते-बढ़ते रहते हैं जिसे कृषि मूल्यों में उच्चावचन (Fluctuation) या परिवर्तन कहते हैं। यह परिवर्तन कई कारणों से होता है, जैसे कृषि उत्पादन कम होना, उपभोग की मात्रा बढ़ जाना, सट्टेबाजी की प्रवृत्ति, सामान्य मूल्य-स्तर में वृद्धि, व्यापार चक्र, मुद्रा-पूर्ति में वृद्धि, सरकार की नीति, आदि।

कृषि मूल्यों में उच्चावचन के कारण

कृषि मूल्यों में उच्चावचन के कारण निम्नलिखित हैं :

(1) **कृषि उत्पादन में उच्चावचन**—कृषि मूल्यों में परिवर्तन कृषि उत्पादन में हुए परिवर्तन के कारण होते हैं। जिस समय मानसून अच्छा व प्रकृति की कृपा होती है तो उत्पादन बढ़ जाता है जिससे कृषि पदार्थों के मूल्य गिर जाते हैं। इसके विपरीत, जब मानसून समय पर नहीं आता या फसल में कीड़ा लग जाता है तो उत्पादन कम हो जाता है जिससे कृषि पदार्थों के मूल्य बढ़ जाते हैं।

(2) **सरकार की साख नीति**—जब सरकार की साख नीति स्थिर रहती है और उस पर कड़ा नियन्त्रण रहता है तो मूल्य गिरने लगते हैं, लेकिन इसके विपरीत, यदि सरकार की साख नीति साख विस्तार करने की होती है तो मूल्य बढ़ने लगते हैं। इसी प्रकार सरकारी घाटे की वित्त-व्यवस्था व मुद्रा-पूर्ति भी कृषि मूल्यों पर प्रभाव डालती है।

(3) **सामान्य मूल्य-स्तर**—यदि देश के सामान्य मूल्य-स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो कृषि मूल्य भी सामान्य रहते हैं, लेकिन जब देश का सामान्य मूल्य-स्तर बढ़ने लगता है तो कृषि मूल्य भी बढ़ने लगते हैं। इसके विपरीत होने पर मूल्य-स्तर गिरने लगते हैं।

(4) **संग्रह शक्तियों का प्रभाव**—कृषि वस्तुओं पर व्यापारियों व किसानों की संग्रह शक्तियों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि यह शक्तियाँ प्रभावशाली होती हैं तो वे अत्यधिक क्रय करके अपने पास पूर्ति बनाये रखती हैं और इस प्रकार कृत्रिम कमी उत्पन्न करके मूल्य वृद्धि कर देती हैं।

(5) **फसल पर बिक्री**—किसानों द्वारा लगान देने व अन्य आवश्यक व्ययों का भुगतान करने या भण्डार सुविधाएँ न होने के कारण फसल के आते ही बिक्री के लिए प्रस्तुत कर दिया जाता है। इससे फसल के समय पूर्ति बढ़ जाती है और मूल्य गिर जाते हैं लेकिन बाद में मूल्य बढ़ जाते हैं।

(6) **आयात व निर्यात**—कृषि पदार्थों के मूल्यों पर आयात व निर्यात का भी प्रभाव पड़ता है। जिस समय किसी पदार्थ को निर्यात करने की अनुमति दे दी जाती है तो उसका मूल्य देश में बढ़ जाता है, क्योंकि आन्तरिक उपभोग के लिए पूर्ति कम हो जाती है। इसके विपरीत, जब किसी वस्तु का आयात खोल दिया जाता है तो उसका मूल्य देश में गिर जाता है।

Scanned with CamScanner

(7) **परिवहन साधन**—परिवहन साधन भी कृषि वस्तुओं के मूल्यों में परिवर्तन ला देते हैं। जब किसी कृषि पदार्थ को ले जाने के लिए परिवहन-साधन उपलब्ध नहीं होते हैं तो उस पदार्थ का मूल्य बढ़ जाता है, लेकिन जब परिवहन साधन उपलब्ध हो जाते हैं तो उसका मूल्य गिर जाता है।

(8) **सरकारी व्यय**—सरकारी व्यय भी कृषि पदार्थों के मूल्यों पर प्रभाव डालते हैं। यदि सरकारी व्ययों में वृद्धि होती है तो सामान्य मूल्य-स्तर बढ़ता है जिसके परिणामस्वरूप कृषि पदार्थों के मूल्य बढ़ जाते हैं। इसकी विपरीत स्थिति में मूल्य गिर जाते हैं।

(9) **व्यापारिक चक्र**—व्यापारिक चक्रों के प्रभाव से भी कृषि पदार्थों के मूल्यों में परिवर्तन हो जाते हैं।

(10) **अन्य कारण**—कृषि पदार्थों के मूल्यों में उच्चावचन के अन्य कारण इस प्रकार हैं—(i) पूर्ति में परिवर्तन, (ii) उपभोग की मात्रा में वृद्धि, (iii) प्राकृतिक प्रकोप, (iv) पूँजीगत वस्तुओं में भारी विनियोग।

कृषि मूल्यों में उच्चावचन के परिणाम

अथवा

कृषि मूल्यों के स्थायित्व की आवश्यकता

कृषि मूल्यों में परिवर्तन होने से समाज के सभी वर्गों पर इसका प्रभाव पड़ता है। अतः इनमें स्थायित्व लाने की आवश्यकता है। यह प्रभाव इस प्रकार हैं :

(1) **उपभोक्ताओं पर प्रभाव**—कृषि मूल्यों में परिवर्तन होने से उपभोक्ताओं पर प्रभाव पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप वे अपने व्ययों को सन्तुलित नहीं कर पाते हैं। उनको उस समय बड़ी कठिनाई होती है जब कृषि मूल्य बढ़ जाते हैं।

(2) **औद्योगिक उत्पादन पर प्रभाव**—जब कभी भी कृषि मूल्य बढ़ते हैं तो औद्योगिक माल के उत्पादकों को अपने तैयार माल के मूल्य भी बढ़ाने पड़ते हैं जिससे उनकी माँग पर प्रभाव पड़ता है।

(3) **किसानों पर प्रभाव—सर रोजर थॉमस** (Sir Roger Thomas) के अनुसार, "**वर्षा के बाद कृषकों का सबसे बड़ा शत्रु मूल्य-परिवर्तन ही रहा है।**" (Next to rainfall, price change has been the greatest enemy of farmers)। जब किसी पदार्थ के मूल्य बढ़ जाते हैं तो कृषक अगले वर्ष उसी की खेती करता है जिसका परिणाम यह होता है कि उस वर्ष उस पदार्थ की पूर्ति बढ़ जाने से मूल्य गिर जाते हैं। इसके विपरीत, जिन पदार्थों के मूल्य गिर जाते हैं उनका उत्पादन कृषक न करके उन पदार्थों का उत्पादन करता है जिनके मूल्य अधिक हैं। इससे अगले वर्ष उस पदार्थ की पूर्ति कम होने से मूल्य बढ़ जाते हैं। इस प्रकार कृषक बैडमिण्टन की चिड़िया के समान हो जाता है, जो कभी इस ओर तो कभी उस ओर, कभी किसी पदार्थ का उत्पादन करता है जो कभी किसी का। इस प्रकार उसके उत्पादन पदार्थों में अनिश्चितता रहती है।

(4) **आयात-निर्यात पर प्रभाव**—कृषि पदार्थों के मूल्यों में परिवर्तन आयात-निर्यात पर भी प्रभाव डालते हैं। जब कृषि पदार्थों के मूल्य अधिक होते हैं तो उनका आयात किया जाता है, लेकिन जब उनके मूल्य गिर जाते हैं तो उनका निर्यात किया जाता है। इस प्रकार आयात-निर्यात नीति भी परिवर्तित होती रहती है।

(5) **उत्पादकों को हानि**—कृषि पदार्थों के मूल्यों में परिवर्तन उत्पादकों को हानि पहुँचाते हैं। इस उत्पादक वर्ग में किसान व औद्योगिक उत्पादक दोनों ही आते हैं।

भारत में कृषि मूल्यों की प्रवृत्तियाँ

भारत में अधिकांश खेती मानसून पर निर्भर है जो कभी भी निश्चित नहीं है। ऐसी स्थिति में यहाँ सदा ही कृषि पदार्थों के उत्पादन घटते-बढ़ते रहते हैं जिनके परिणामस्वरूप कृषि मूल्य भी परिवर्तित होते रहे हैं। 1943 के बंगाल के अकाल का मुख्य कारण चावल के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि थी।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् देश में नियोजन की नीति अपनायी गयी है, लेकिन फिर भी कृषि मूल्य स्थिर नहीं हैं। प्रथम योजना के समय मूल्य काफी ऊँचे थे, लेकिन योजना अवधि में कृषि उत्पादन के बढ़ने पर कृषि मूल्यों में लगभग 20 प्रतिशत की कमी आयी थी, जबकि द्वितीय योजना में आशा के अनुरूप कृषि उत्पादन न बढ़ने व मुद्रा-स्फीति के कारण कृषि मूल्यों में 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह वृद्धि की प्रवृत्ति तृतीय योजना में भी जारी रही और आज भी आपात काल के कुछ समय को छोड़कर जारी है। "खाद्य पदार्थों का थोक मूल्य सूचकांक जो 1993-94 में 280 था वह दिसम्बर 2005 के अन्त में 198 हो गया।"[1]

1. *Economic Survey*, 2005-2006, p. S-60.

Scanned with CamScanner